सामवेद संहिता

यह कर्म में उद्गाता देवों की स्तुति में स्वरसहित मन्त्रगान करता है। इस औद्गात्रकर्म के लिए आवश्यक मंत्रों का संग्रह ही सामवेद है। 'साम' शब्द में देवताओं अथवा दैत्यों को प्रसन्न करने अथवा उनके क्रोध को शान्त कर देने का मूल भाव निहित है। यह मूल भाव इस शब्द की विभिन्न व्युत्पत्तियों से स्पष्ट हो जाता है -

1) स्यति नाशयति विघ्नानिति सामन् - जो विघ्नों का नाश करता है वह साम है।
2) सम्यति सन्तोषयति देवान् अनेन इति सामन् - जिसके द्वारा देवताओं को सन्तुष्ट कर दिया जाए, वह साम है।

ऋक् एवं साम में परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है। साम का प्रयोग मुख्यतः दो अर्थों में किया गया है।

(1) ऋक् मंत्रों के लिए साम शब्द का प्रयोग होता है।
(2) ऋक् मंत्रों के ऊपर गाए जाने वाले सभी गान भी साम हैं।

बृहदारण्यक उपनिषद् ने द्वितीय अर्थ को ग्रहण करते हुए साम शब्द का अर्थ 'ऋक् से सम्बन्ध स्वर प्रधान गान' माना है। इस उपनिषद् के अनुसार साम शब्द में "सा" का अर्थ ऋक् है और "अम" का अर्थ षडज, ऋषभ आदि से निषाद पर्यन्त सात स्वर हैं।

सामान्यता सर्वत्र यह धारणा प्रचलित है कि सामवेद में ऋग्वेद के ही गेय मन्त्रों का संकलन मात्र है अतः

सामवेद अधिक महत्वपूर्ण से नहीं है। किन्तु यह धारणा नितान्त भ्रामक है। वैदिक साहित्य में सामवेद का स्थान अत्यन्त गौरवपूर्ण है। बृहद्देवता ने स्पष्ट प्रतिपादित किया है कि 'जो साम को जानता है वही वेद के रहस्य को जानता है'—
"सामानि यो वेत्ति स वेद तत्त्वम्।"
गीता में भगवान श्री कृष्ण ने सामवेद को ही अपना स्वरूप घोषित किया है। ऋग्वेद और अथर्ववेद में भी साम की विपुल प्रशंसा है। ऋषि स्पष्ट कहता है— "जो निरन्तर जागृत है उसी को ऋक् और साम प्राप्त होते हैं।"

सामवेद ऋग्वेद पर तो पूर्णतया आधारित है ही, किन्तु अप्रत्यक्षतया इसका यजुर्वेद से भी साम्य है, क्योंकि "इन दोनों का संग्रह यज्ञ के क्रियात्मक उद्देश्य" के अभिप्राय से हुआ था। यजुर्वेद का संकलन याज्ञिक अनुष्ठान की दृष्टि से हुआ व सामवेद का संकलन सोमयागों में गाए जाने वाले मन्त्रों की दृष्टि से हुआ।

सामवेद की मन्त्र संख्या 1875 है। इनमें 1771 मन्त्र ऋग्वेद से ग्रहण किए गए हैं। अतः सामवेद में केवल मन्त्र ही नवीन हैं। किन्तु ऋग्वेद के 1771 मन्त्रों में 104 से मन्त्र पुनरुक्त हैं और सामवेद के नए मन्त्रों 267 में से पाँच मन्त्र पुनरुक्त हैं। इस प्रकार 104 से सामवेद में कुल 99 मन्त्र ऐसे हैं जो ऋग्वेद में सर्वथा अप्राप्त हैं।

- सामवेद दो भागों में विभक्त है— पूर्वार्चिक तथा उत्तरार्चिक

- <u>पूर्वार्चिक</u>— इसमें 6 प्रपाठक अथवा अध्याय हैं तथा कुल 650 मंत्र हैं। ऋग्वेद के भिन्न-भिन्न मण्डलों में

विभिन्न ऋषियों के द्वारा दृष्ट एक ही देवता विषयक म..
का इसमें संकलन है। प्रथम प्रपाठक की संज्ञा 'आग्नेयक'
या 'आग्नेयपर्व' है, जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है,
इसमें अग्नि देवता से सम्बन्द्ध मंत्र हैं। द्वितीय,
तृतीय तथा चतुर्थ प्रपाठक में इन्द्र के स्तुतिपरक
मन्त्र हैं, अतः ये तीनो मिलकर 'ऐन्द्र पर्व'
कहलाते हैं। पञ्चम प्रपाठक का अभिधान 'पवमान पर्व' है।
इसमें सोम विषयक ऋचाएँ संकलित हैं जो ऋग्वेद के
नवम मण्डल से उद्धृत की गई हैं। षष्ठ प्रपाठक का
नाम आरण्यक पर्व है, इस षष्ठ प्रपाठक में न तो
देवताविषयक ऐक्य है और न ही छन्द की समानता। किन्तु
इस अध्याय में गान-विषयक एकता प्राप्त होती है।
प्रथम से पंचम प्रपाठक तक का मन्त्रसमूह 'ग्राम गान'
कहलाता है किन्तु छठे प्रपाठक की ऋचाएँ अरण्य गान हैं।

- <u>उत्तरार्चिक</u> - इसमें नौ प्रपाठक हैं और मन्त्रों की संख्या कुल 1225 है। ये समस्त मंत्र 4000 गीतो में समाहित हैं। प्रत्येक गीत में तीन-तीन अथवा कदाचित चार-चार मन्त्र हैं। प्रत्येक गीत में आए हुए मन्त्र अथवा ऋचाएँ परस्पर सम्बद्ध हैं। उत्तरार्चिक में आए हुए प्रत्येक ऋचासमूह की प्रथम ऋचा पूर्वार्चिक में भी प्राप्त होती है। उत्तरार्चिक का महत्व पूर्वार्चिक की अपेक्षा इस दृष्टि से कुछ न्यून है।

श्री रामसूर्ति शर्मा के मत मे : " वह विद्यार्थी जो उद्गाता
होने का इच्छुक था, पहले तो पूर्वार्चिक की ऋचाओं
को उस रूप में स्मरण करता होगा जिस रूप में उनका
यज्ञ में गान किया जाता था।

पूर्वार्चिक मे ऋचाओ का विकास प्रमुखत: छन्द की दृष्टि से किया गया है और गौण रूप मे स्तूयमान देवताओं की दृष्टि से। किन्तु उत्तरार्चिक में सामो का विन्यास प्रमुख यज्ञो की दृष्टि से किया गया है।"

सामवेद की कितनी शाखाएँ थी, इस सम्बन्ध मे पतञ्जलि का 'सहस्त्रवर्त्मा सामवेद' वाक्य अतिप्रसिद्ध है, जिससे सामवेद की एक हजार शाखाओं के नाम उपलब्ध होते नहीं। अत: अनेक विद्वानों का यह कथन है कि पतञ्जलि द्वारा प्रयुक्त 'वर्त्म' शब्द का अर्थ शाखा नहीं है अपितु इसका तात्पर्य यही है कि सामवेद के गान की एक सहस्त्र पद्धतियाँ प्रचलित थीं, श्री सातवलेकर एवं श्री सत्यव्रत सामश्रमी ने यही मन्तव्य उपस्थापित किया है। जैमिनि गृह्यसूत्र ने सामवेद की शाखाएँ गिनाई हैं जिनमें से सम्प्रति तीन शाखाएँ उपलब्ध होती हैं।

1) कौथुम शाखा — इसी शाखा की संहिता सर्वाधिक प्रचलित है। आद्य शंकराचार्य ने वेदान्तभाष्य में अनेक स्थलों पर इस शाखा का नाम निर्देश किया है। ताण्ड्य ब्राह्मण तथा छान्दोग्य उपनिषद् सामवेद की इसी शाखा से सम्बन्ध हैं। इसमें मंत्रो की गणनापद्धति अध्याय, खण्ड, मंत्र - इस प्रकार है।

2) राणायनीय शाखा - इस शाखा की संहिता तथा कौथुम शाखा की संहिता में कोई मौलिक अन्तर नहीं है। दोनों में वे ही मन्त्र उसी क्रम से प्राप्त होते हैं किन्तु इस शाखा की गणना पद्धति भिन्न प्रकार की है जो प्रपाठक, अर्धप्रपाठक, दशति, मन्त्र - इस प्रकार है। दोनों शाखाओं के उच्चारण में भी कहीं-कहीं पार्थक्य है।

Scanned with CamScanner

3) जैमिनीय शाखा - इस शाखा की संहिता अन्य दोनों शाखा से पर्याप्त भिन्न है, इसकी मंत्र संख्या है अर्थात् कौथुम शाखा की अपेक्षा इसमें मंत्र 1687 कम हैं। सम्प्राति इस शाखा के समग्र ग्रन्थ 182 संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक, श्रौत तथा गृह्यसूत्र उपलब्ध हो गए हैं। इसी शाखा की एक और अवान्तर शाखा तवल्कार शाखा है जिससे केनोपनिषद् सम्बद्ध है।

सामवेद संहिता के जितने पाठ प्राप्त होते हैं उनमें मंत्र उसी रूप में दिए गए हैं जिस रूप में वे गाए जाते रहे होंगे। संगीत के स्वर तो सात ही हैं किन्तु सामवेद को संगीतमय बनाने के लिए जो कुछ परिवर्तन किए गए, उन्हे साम विकार कहा जाता है,

1) परिवर्तन - शब्द के उच्चारण मे परिवर्तन; यथा 'अग्ने' के स्थान पर 'अग्नायि')

2) विश्लेषण - एक पद को पृथक - पृथक करके बोलना; यथा 'वीतये' के स्थान पर 'वोयि तोयायि')

3) विकर्षण - एक ही दीर्घ समय तक उच्चारण; तथा 'आयाहि' के स्थान पर 'आयाही'

4) अभ्यास - पदका पुनः पुनः उच्चारण; तथा तोयायि तोयायि)

5) विराम - सुविधा अथवा लय उत्पन्न करने के लिए पदों के मध्य अल्पतम रुक जाना)

6) स्तोभ - गायन मे कतिपय ~~निः~~ निरर्थक वर्णो अथवा शब्दो को जोड़ना - हो, वा, औ, हाउ ~~[illegible]~~ राथि आदि ऐसे ही उदाहरण हैं।

Scanned with CamScanner